International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

रामधारी सिंह दिनकर के काव्य साहित्य का स्वाधीनता संग्राम में योगदान

Madhu Singla

Assistant Professor, Aggarwal College, Ballabgarh

सारांशः
आधुनिक हिंदी साहित्य के अनेक देदीप्यमान नक्षत्रों में से एक रामधारी सिंह दिनकर ने अपने गद्य और पद्य में रचित साहित्य द्वारा देश को नई गति प्रदान की है। पराधीन भारत की वेदना की जन अनुभूति को उन्हांने काव्य में लिपिबद्ध कर समाज में नवीनता का अलख जगाया है। इन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धामिक, ऐतिहासिक सभी परिस्थितियों को अपनी कलम द्वारा मूर्त रूप प्रदान किया। इनकी कविताओं में कवि हृदय की वेदना, द्वंद, मानवीयता, देश–भक्ति, आशा, प्रेरणा, संवेदनशीलता, सत्य और अहिंसा जैसे सभी गुण दृष्टिगोचर होते हैं। बदलती परिस्थितियों और महापुरुषों के प्रभाव से उत्पन्न शांति एवं प्रौढ़ता का भाव भी इनकी कविताओं में दिखाई देता है। कवि होने के साथ–साथ दिनकर जी विचारक भी रहे हैं। उन्होंने मानव जीवन की चिरंतन समस्याओं पर मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। इनके प्रत्येक काव्य संग्रह में राष्ट्रीय अस्मिता का उद्घोष एवं युग जीवन का स्वर गुंजारित होता है। पराधीन भारत के लिए इनकी वाणी में केवल विद्रोह और क्रांति ही नहीं बल्कि सौंदर्य व प्रेम चेतना का संदेश भी है। रामधारी सिंह दिनकर जैसे साहित्यकार का साहित्य न केवल उस समय में अपितु वर्तमान संदर्भ में भी राष्ट्र के प्रति प्रमे ,जागरूकता और मानवता का ज्वलंत उदाहरण है। जीवन के शाश्वत मूल्यों को रेखांकित करते हुए इन्होंने मनुष्य के कर्म पथ को प्रशस्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।इसीलिए दिनकर जी को जन–जन का प्रतिनिधि एवं राष्ट्रीय कवि होने का गौरव प्राप्त है।

संकेत शब्दः देदीप्यमान – ज्वलंत वैभवए, अक्षुण्ण – स्थायी, दिग्दर्शन – अभिज्ञान, उद्घोष – घोषणा, प्रशस्त – प्रशंसा योग्य, उदंत मार्तण्ड – उगता हुआ सूर्य -

प्रस्तावनाः
भारतीय साहित्य का संबंध बहुभाषी भारतीय मनोभूमि से है जो अपने वैविध्य में भी एक है। आचार–व्यवहार में अंतर होने के बाद भी इसकी सांस्कृतिक और वैचारिक पृष्ठभूमि एक समान है। साहित्य समाज के यथार्थ और आदर्श को चित्रित करता है। मनुष्य जैसा है और जैसा वह चाहता है अर्थात् साहित्य का भतू , वर्तमान और भविष्य के प्रति सचेत रहकर सृजन किया जाता है। साहित्यकार समाज से गृहीत अपने शब्दचित्रों को मानवीय संचित अभिलाषा के आधार पर पिरोता है। भारतीय साहित्य की प्राचीनता का आधार वेदों को माना जाता है। ''साहित्य की कोई भी धारणा समाज की उपेक्षा करके अक्षुण्ण नहीं रह सकती। समाज के विविध मनोभावों के विकास से ही साहित्य का विकास होता है। भारत एक अखंड राष्ट्र है, इस अखण्ड राष्ट्र के सारगभित साहित्य के लिए समेकित मनोभिम की आवश्यकता आज भी बरकरार है।"1
संकट अथवा विषम परिस्थितियां में साहित्य ने अपनी भूमिका का निर्वहन सफलतापूर्वक किया है क्योंकि साहित्यकार ईश्वर द्वारा प्रदत्त विशिष्ट प्रतिभा लिए होता है। ऐसे में उसका उद्वेलन कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक तथा अन्य विधाओं में लेखन के सृजन द्वारा प्रकट होता है। साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक, धामिक,और राजनैतिक जीवन का दिग्दर्शन अन्यान्य दृष्टिकोण से परिलक्षित होता है। "रचनाकार के समक्ष दो प्रकार के यथार्थ होते हैं, प्रथम

वस्तुनिष्ठ और द्वितीय आत्मनिष्ठ। जीवन के प्रत्येक क्षण में वह अपने चारों ओर के क्रियाकलापों के प्रति पूर्णरूपेण सचेत रहता है,उसके आसपास के भौतिक तत्व चाहे, वे सजीव हैं अथवा निर्जीव, उनकी उपस्थिति ही रचनाकार को उद्वेलित संवेदित करती है। सांस्कृतिक सौंदर्य चिंतन के परिप्रेक्ष्य में कवि की अंतरयात्रा उसे संवेदना के चौराहे पर ठिठकने के लिए भी विवश करती है।"2

साहित्य समाज में परिवर्तन लाने में सशक्त भूमिका निभाता है। 'राष्ट्रीयता' हिंदी साहित्य में आधुनिक काल की देन है।स्वाधीनता संग्राम को तीव्रता और जनमानस में स्वाधीनता के प्रति जागरूकता और प्रतिबद्धता का भाव जागृत करने में साहित्य का योगदान अतुलनीय रहा है। विकृत साहित्य द्वारा समाज को अधोगति की ओर तथा सद्साहित्य से सदपथ पर आरूढ़ किया जा सकता है। परिस्थितिवश समाज जब भी दिशाहीन हुआ, मानवीय मूल्यों का ह्रास हुआ और अपसंस्कृति का बोलबाला हुआ तब तब अनेकानके साहित्यकारों ने अपनी कलम द्वारा इनको कलम (खत्म) करने का सार्थक प्रयास किया। कुछ ऐसा सशक्त प्रयास ओज की साक्षात प्रतिमा और भारतीय संस्कृति के आख्याता माने जाने वाले साहित्यकार रामधारी सिंह दिनकर रहे हैं। इनके काव्य साहित्य में युगीन प्रवृतियां विशेष रूप से दृ ष्टिगोचर होते हैं इनके साहित्य में क्रांति और विद्रोह, सौंदर्य, प्रेम चेतना तथा भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट प्रेम परिलक्षित हुआ है। इनकी विचारधारा किसी रूढ़िवादी परंपरा की अनुवतिनी नहीं है। दिनकर जी राष्ट्रीयता, शौर्य, तेज और पौरुष के कवि के रूप में जनता में समाहित रहे। दिनकर जी के कवि जीवन का वास्तविक आरंभ सन 1930 से होता है।"सन 1935 में 'रेणुका' के प्रकाशन के साथ तो वे हिंदी के उदीयमान कवि के रूप में सारे देश में विख्यात हो गए थे।सन 1928 से 1947 तक के काल में रचित उनका काव्य पूर्ववर्ती काव्य कहा जा सकता है। इस दौरान 'रेणुका', 'हुंकार','रसवंती', 'द्वंद गीत', 'सामधेनी', ' कुरुक्षेत्र' और 'बापू' आदि काव्य ग्रंथ लिखे गए।"3

लगभग 50 वर्षों तक दिनकर जी ने हिंदी साहित्य में लगभग सभी विधाओं में लिखा। सन 1924 से 1974 तक के समय में स्वतंत्रता पूर्व का और स्वतंत्रता प्राप्ति एवं उसके पश्चात बदलती विभिन्न परिस्थितियों को उन्होंने देखा,समझा,भोगा और यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया। इनके काव्य में स्वतंत्रता प्राप्ति की छटपटाहट, अन्याय के प्रति रोष का भाव इनके काव्य संग्रह में स्पष्ट दिखाई देता है। कविवर दिनकर द्वारा रचित तेंतीस कविताओं का संग्रह 'रेणुका' का प्रकाशन सन् 1935 में हुआ। मंगल आह्वान के पश्चात यह तीन खंडों में विभाजित है। पहले खंड में 'तांडव', 'हिमालय', 'प्रेम का सौदा', 'कविता की पुकार', 'बागी'इत्यादि नौ कविताओं में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करते वर्तमान विभीषिकाओं के क्रांति के गीत गायें हैं। दूसरे खंड में 'जागरण','विश्व छवि', 'गीतवासिनी', 'निर्झरिणी', 'फूल' इत्यादि ग्यारह कविताएं हैं और तीसरे खंड में 'फूंक दे जो प्राण में उत्तेजना', 'मनुष्य', 'विधवा', 'याचना', 'सुंदरता और काल' इत्यादि नौ कविताएं हैं। इन कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और यथार्थमलूक कला चेतना की अजस्त्र धारा बहती प्रतीत होती है।' रेणुका' की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का स्वर अनेक रूपों में मुखरित हुआ है। ध्वंसक क्रांति का एवं जनता की रौ भावनाओं का आह्वान 'तांडव' कविता में है। इसके अतिरिक्त 'बोधिसत्व' में अछूतोंद्धार की समस्या,'कस्मै देवाय' में सांप्रदायिक दंगे, आथिक शोषण, विदेश नीति, किसान आंदोलन जैसे विषयों को स्वर प्रदान किया गया है। 'कविता की पुकार' में ऋणग्रस्त भारतीय किसानों की दशा का हृदयस्पर्शी मामिक चित्रण किया गया है।अतीतप्रियता कवि की राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख पक्ष है। जिसे 'रेणुका' में सर्वाधिक महत्व दिया गया है। 'रेणुका' काव्य संग्रह की लगभग सभी रचनाएं प्रगतिवादी क्रांतिमयी और राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत है।

सन 1938 में 'हुंकार' काव्य संकलन प्रकाशित हुआ। जिसकी अठ्ठाईस कविताओं में राष्ट्रीय भावना स्थिरता को ग्रहण करते प्रतीत होती है। इस संकलन में दिनकर जी उग्र क्रां तकारी कवि के रूप में उभरे हैं क्योंकि समस्त कविता क्रांतिकारी भावों से परिपूर्ण है। अर्थात क्रांति का मूर्त रूप हुंकार की कविता में दिखाई देता है। 'असमय आह्वान' में कवि ने एक कवि के भाव देश के प्रति अभिव्यक्त किए हैं कि वह गरीबी, अन्याय, शोषण व अत्याचार के प्रति उदासीन नहीं रह सकता।' तकदीर का बंटवारा' में कवि ने हिंदु–मुसलमानों की भर्त्सना करते हुए उन्हें गुलामी से आजादी का संदेश दिया है।'महामानव की खोज' और 'कविता का हठ' में युद्ध व क्रांति संबंधी भाव अभिव्यक्ति हुई है।' देश की भूख', 'हाहाकार' और 'भविष्य की आहट' में समसामयिक यथार्थ को स्वर प्रदान किए गए हैं। 'हुंकार' काव्य संग्रह की 'अनल किरीट', 'विपथगा', 'भीख', 'दिगंबरी', लगभग सभी कविताओं में कवि की राष्ट्रीय

भावना एवं देशभक्ति को प्रौढ़ता प्राप्त हुई है। "यद्यपि कवि ने क्रांति को साधन के रूप में अपनाया तदपि उनका साध्य दिया तो लोक मंगल की भावना ही रहा है। क्रांति और लोकमंगल की भावना 'हुंकार' की आत्मा बन गई हैं जो कवि की राष्ट्रीयता की परिचायक भावनाएं हैं।"4

1947 में प्रकाशित इक्कीस कविताओं का संग्रह 'सामधेनी'में 1941 से 1946 तक के क्रांतिकाल का चित्रण किया गया है। राजनीतिक विषम परिस्थितियों से असंतुष्ट इस संग्रह में क्रांति और विोह का स्वर प्रमुख है। अतः इसे युगवाणी की संज्ञा भी दी जा सकती है।

प्रारंभ के सात गीतों में राष्ट्रीयता के भाव प्रवणता से व्यक्त हुए हैं। इस संग्रह में कवि के मनोभावों का मिलाजुला रूप है।द्वितीय विश्व युद्ध की छाया प्रभाव के कारण कवि ने युद्ध यांत्रकता और मानवीयता के भविष्य के प्रति अपने विचारों को रुप दिया है। बिहार दंगों के समय पर लिखी कविता 'हे मेरे स्वदेश', युद्ध के प्रलयकारी रूप का चित्रण करती 'अंतिम मनुष्य' के साथ–साथ क्रांति की आराधना व सैनिकों के प्रोत्साहन से भरी 'सरहद के पार से', 'साथी', फलेगी डालो में तलवार' तथा 'जवानी का झंडा' इत्यादि है। 'कलिंग विजय' और 'अतीत के द्वार पर' कविता में कवि युद्ध को नकारते हुए शांति का आह्वान करते हैं। 'कुरुक्षेत्र' की रचना 'बापू' से पूर्व हुई थी। जिसमें महाभारत के पौराणिकता को नवीनता प्रदान की है। इसलिए उसमे महाभारत से अधिक उच्च स्वर में ध्वंसा का विशेष युग की वाणी का स्वर है। ''युद्ध या संघर्ष की आवश्यकता मानते हुए भी गांधी जी ने उसके हिंसात्मक स्वरूप को त्याज्य बताया है। उन्होंने आत्मबल की विशेषता स्वीकार की है और हृदय परिवर्तन की शक्ति और आवश्यकता का आग्रह किया है। गांधी जी का यह सत्य व अहिंसा का संदेश सक्रिय अहिंसा और प्रेम पर अवलंबित है।"5

तत्पश्चात महात्मा गांधी की अहिंसावादी, क्षमा और शांतिप्रियता से प्रभावित होकर उन्होंने 'बापू' की रचना करी। जिसमें सत्य व अहिंसा के संदेश के साथ कवि के मानसिक विकास और विचारों में स्थिरता दिखाई देती है। देश की स्वतत्रं ता प्राप्ति के लिए कवि और बापू ने अपने–अपने ढंग से स्वाधीनता की लडाई लड़ी थी। किसी समय में दिनकर जी भी गांधी जी की नीतियों को संपूर्णता से स्वीकार नहीं करते थे।अहिंसा के सिद्धांत पर उनका विश्वास नहीं था। अन्याय का सामना भी पुरजारे तरीके से करते थे। हिंसा का उत्तर हिंसा से देते थे, परंतु बापू का अहिंसावादी शां तपूर्ण पथ किस प्रकार से अपने लक्ष्य पर पहुँच रहा था यह उन्हें अद्भुत लगता था।कवि अहिंसा की शक्ति को देखकर विस्मित हो गए थे। देश भक्ति अथवा राष्ट्रीयता की भावना में अहिंसा का भाव सर्वोपरि है। शाश्वत सत्य है की गुलामी की बेड़ियां काटने में गांधी जी द्वारा चलाए गए आदोलनों एवं शिक्षाओं का विशेष प्रभाव था। दिनकर जी के लिए बापू उनके आराध्य ही थे सरलता, सत्यता, सादगी, समर्पण, सहयोग और सदाचार इत्यादि वे अस्त्र–शस्त्र हैं जिनके द्वारा भी स्वतंत्रता प्राप्ति संभव है। इसी से प्रेरित होकर कवि ने संपूर्ण जनता में इस प्रकार के गुणों का समावेश हो अथवा इसके प्रभाव से आमजन प्रभावित हों इसलिए दिनकर जी ने यह कविता लिखी थी।" 'बापू' शीर्षक रचना एक लंबी कविता है, जिसमें कवि की इसी विस्मय मिश्रित श्रद्धा की अभिव्यक्ति है। काव्य के आरंभ में कवि अंगार भरे यौवन की वंदना करते हैं, परतुं बापू तो उनसे भी अलौकिक व आध्यात्मिक है। "6

'बापू' मे दिनकर जी लिखते हैं "संसार पूजता जिन्हें तिलक, रोली, फूलों के हारों से, मैं उन्हें पूजता आया हूं बापू! अब तक अंगारों से।"7

निष्कर्ष:

दिनकर जी मूलतः ओज और आवेश के कवि हैं। लगभग पाँच दशकों तक विभिन्न परिस्थितियों, द्वंदों एवं संघर्षों को देखते हुए उनके मनोभाव कभी तीव्र तो कभी नम्रता लिए हुए हैं। शोषकों के प्रति सहानुभूति हो या विदेशी शासकों की नीतियों की कड़ी आलोचना उन्होंने सदैव उसका विरोध कर भारतीय जनता की चेतना को जागरूक रखने का सफल प्रयास किया है। प्रत्येक काव्यसंग्रह की अपनी निजी सत्ता अथवा पहचान है। प्रत्येक संग्रह में अनेकानेक भावों की अभिव्यक्ति की गई है। दिनकर जी ने उदंत मार्तंड की भांति सदैव देश में प्रेम व्यवहार और सौर्हाता का प्रकाश फैलाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ० पूरनचंद टंडन, भारतीय साहित्य,अभिनव प्रकाशन, भूमिका
2. डॉ० सरला अग्रवाल, साहित्य और संस्कृति, प्रकाशन साहित्य नागर, सस्करण– 2009, आई.एस.बी.एन– 978–81–7711–161–3, पृष्ठ संख्या– 8
3. डॉ० शोभा सूर्यवशं, रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य में जीवन मूल्य, विकास प्रकाशन, आई.एस.बी.एन– 978–93–81317–46–4, पृष्ठ संख्या– 68
4. डॉ० शेखर जैन, राष्ट्रीय कवि दिनकर और उनकी काव्य कला, प्रकाशक–जयपुर पुस्तक सदन, 1973 पृष्ठ संख्या–685
5. डॉ० रेनू महेश्वरी, कुरुक्षेत्र का मिथकीय चिंतन, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण–2005, पृष्ठ संख्या– 45
6. डॉ० शोभा सूर्यवंशी, रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य में जीवन मूल्य, विकास प्रकाशन,पृष्ठ संख्या– 697. रामधारी सिंह दिनकर,बापू, लोकभारती प्रकाशन,पद–1, पृष्ठ संख्या– 3